

त्रिस्थली (त्रि + स्थल oder स्थली) f. die drei (heiligen) Orte: °सेतु
Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1233. fg. 1403. °पात्रा 1234.

1. त्रिस्थान (त्रि + स्थान) n. ein durch eine Dreizahl berühmter Ort:
यत्र भागोर्धी गङ्गा पतते दिशमुत्तराम् । महेन्द्रस्य त्रिस्थाने MBh. 13, 702.

2. त्रिस्थान (wie eben) adj. durch die drei Weltgebiete reichend, zur
Erkl. von त्रित Nir. 9, 25.

त्रिलोतम् (त्रि + लो) 1) adj. dreiströmig. — 2) f. a) Bein. der Gaṅgā
AK. 1, 2, 3, 30. H. 1081. an. 3, 749. MED. s. 53. ÇĀK. 165. KUMĀRAS. 7, 15.
RAGH. 10, 64. Vgl. त्रिपथगा (u. त्रिपथ), त्रिमार्गा (u. त्रिमार्ग), त्रिवर्त्म-
गा. — b) N. pr. eines andern Flusses H. an. MED.

त्रिलोतसी (wie eben) f. N. pr. eines Flusses MBh. 2, 375.

त्रिःसामन् (त्रिस् + साम्) n. N. eines Sāman Ind. St. 3, 218.

त्रिःस्नान (त्रिस् + स्नान) n. dreimaliges Baden am Tage KĀM. NITIS.
2, 28.

त्रिकल्प (von त्रि + कल्प) adj. drei Mal gepflügt AK. 2, 9, 9. H. 968.

त्रिकविम् s. u. कविम्.

त्रिकायण (त्रि + कायन) adj. f. ई dreijährig KĀTJ. ÇR. 22, 9, 13. KAUC.
12. ANUPADA 5, 2. MBh. 3, 14854. AK. 2, 9, 69. H. 1253. 1272. कृते युगे
वेदवती त्रेतायां जनकात्मजा । द्वापरे द्वैपदी कृपा तेन कृत्वा त्रिकायणी ॥
wohl so v. a. in drei Weltaltern zur Erscheinung kommend BRAHMA-
VAIV. P. im ÇKDR.

त्रीशट (तीसट) m. N. pr. eines medic. Autors Verz. d. B. H. No. 947.

त्रीषु (त्रि + षु) adj. mit drei Pfeilen versehen: धनुस् ÇĀÑKH. ÇR. 3,
2, 7. — Vgl. तिसृधन्वन्.

त्रीषुक adj. dass. KĀTJ. ÇR. 25, 4, 47.

त्रीष्टकं (त्रि + ष्टका) adj. mit drei Ishṭakā versehen ÇAT. BR. 10,
5, 2, 21.

त्रुट्, त्रुटति (DHĀTUP. 28, 82) und त्रुत्यति P. 3, 1, 70. VOP. 8, 67. intrans.
zerreißen, zerbrechen, bersten, auseinanderfallen: घनङ्गकलक्रीडात्तु-
टतत्तुको मुक्ताजालम् BĀRTR. 1, 95. त्रुटते पार्श्वे PAÑKĀT. 121, 2. त्रुटित इव
मुक्तामणिसरः UTTARARĀMA. 13, 9. त्रुटितं पयोधरतटे हारं पुनर्योजय ŚĪH.
D. 42, 21. यावन्मे दत्ता न त्रुत्यति HIT. 13, 10. तस्यासिना — चर्ममात्रं न
तुत्रोत् कङ्कटस्यातिसंकोटे RĀGA-TAR. 6, 249. नगर्गः — त्रुत्यदृशालमेखलाः
1, 301. — caus. Etwas zerreißen, zerbrechen: पार्श्वे त्रेटयित्वा PAÑ-
KĀT. 146, 24. 254, 24. तोटयत्पायसान्बन्धान् (so beide Ausgg.) RĀGA-TAR.
6, 248. त्रेटयते DHĀTUP. 33, 25. — Vgl. त्रुट्

त्रुटि (von त्रुट्) f. SIDDH. K. 248, a, 3. त्रुटी (nicht zu belegen) BHAR. zu
AK. ÇKDR. 1) ein kleines Bischen, ein Atom AK. 3, 4, 40. H. 1427.
H. an. 2, 94. MED. t. 16. — 2) ein best. sehr kleiner Zeitabschnitt AK. H.
an. MED. MBh. 1, 1292. HARIV. 9329. VARĀH. BRH. S. 2, c (A 1, b). SŪRAS.
1, 11. = 1/2 Lava = 1/4 Kshaṇa = 1/40 Kāshṭhā = 1/400 Kalā = 1/4000
Nālikā = 1/6000 Muhūrta Parāçara beim Schol. zu VARĀH. BRH. S.
= 1/100 Vedha = 1/300 Lava = 1/900 Nimesha = 1/2700 Kshaṇa =
1/13500 Kāshṭhā = 1/202500 Laghu = 1/3037500 Nādikā = 1/6075000 Mu-
hūrta BHĀG. P. 3, 11, 6. fgg. — 3) kleine Kardamomen AK. 2, 4, 4, 13.
3, 4, 40. H. an. MED. Kardamomen von Guzerate RATNAM. 117. SUÇR.
2, 505, 1. — 4) ein best. Baum (कटल) NIGH. Pa.; vgl. त्रेटि. — 5) Zweifel
AK. H. an. MED. — 6) N. pr. einer der Mütter im Gefolge von Skan-

da MBh. 9, 2635. — WILSON hat noch die Bedd.: cutting, breaking;
loss, destruction; breaking a promise, etc.; vgl. त्रुट्.

त्रुटिवीज (त्रुटि + वीज) m. Arum Colocasia Lin. (कचु) ÇĀDAM. im
ÇKDR.

त्रुटिश्म् adv. nach den त्रुटि genannten kleinen Zeitabschnitten: त्रुटि-
शो लवणश्चापि गणयते कालनिश्चयः MBh. 3, 3782. अथ्यक्तप्रकृतिर्यं कला-
शरीरः मूल्मात्मा त्पणत्रुटिशोनिमेषरोमा (hier spielen Zeit- und Längen-
maasse in einander über) 12, 12068.

त्रुट्यवषव (त्रुटि + षव) m. die Hälfte einer Truṭi (als Zeitabschnitt)
VARĀH. BRH. S. 2, c (A, 1, b).

त्रुट् (= त्रुट्), mit वि zerkratzen, schinden: कण्टकैर्वित्त्वादिवृत्तोद्भवै-
रेनाः काणादिकाः (d. i. गाः) विरुजेयुः वित्रुजेयुः Schol. zu KĀTJ. ÇR.
22, 3, 22.

त्रुप्, त्रौपति; त्रुफ्, त्रौफति; त्रुम्प्, त्रुम्पति; त्रुम्फ्, त्रुम्फति verletzen,
beschädigen DHĀTUP. 11, 12, 13, 16, 17. — Vgl. तुप् u. s. w.

त्रैता (von त्रय) f. 1) Dreizahl: धर्माद्यो हि यथा त्रेता वक्रिस्त्रेता तथैव
च । तथैव पुत्रपौत्राणां स्वर्गस्त्रेता किलान्तयः ॥ MBh. 14, 2759. अग्नित्रेता
die dretheiligen Feuer M. 2, 231. MBh. 12, 3995. 3410. एको ऽग्निः पूर्वमेवा-
सी दैलस्त्रेतामकारयत् HARIV. 1410. त्रेताग्नि = अग्नित्रेता 1409. MBh. 13,
3059. 6429. RAGH. 13, 37. त्रेताग्निहोत्र MBh. 12, 6001. Sehr häufig ist त्रे-
ता allein = अग्नित्रेता AK. 2, 7, 19. 3, 4, 14, 71. H. 826. an. 2, 171. MED.
t. 23 त्रेतापूर्तं धूममाघ्राय MBh. 5, 1559. त्रिधा प्रणीतो ज्वलनो मुनिभिर्वेद-
पारगैः । अतस्त्रेतात्वमापन्नो यदेकस्त्रिविधः कृतः ॥ HARIV. 11863. — 2) der-
jenige Würfel oder diejenige Würfelseite, welche mit drei Augen bezeich-
net ist (s. die Erklärer zu KHĀND. UP. 4, 1, 4 und Ind. St. 1, 285, N.): कृतम्,
त्रेता, द्वापरः, आस्कन्दः VS. 30, 18. TS. 4, 3, 3, 1, wo noch अग्निभूः binzu-
kommt. त्रेताकृतसर्वस्व MĀKĀH. 33, 9. त्रेतायु Ind. St. 1, 285, N. — 3) mit
oder ohne युग N. des 2ten Juga oder Weltalters, das Juga mit den
Dreizehlen AK. 3, 4, 14, 71. TRĪK. 1, 1, 112. H. an. MED. कलिः शयानो भ-
वति संजिह्वानस्तु द्वापरः । उत्तिष्ठस्त्रेता भवति कृतं संयद्यते चरन् AIT. BR.
7, 15. MUND. UP. 1, 2, 1. ÇĀÑKH. ÇR. 15, 19, 11. NIDĀNAS. 1, 6. M. 9, 301. 302. 1,
83. 83. 86. त्रीणि वर्षमकृत्वा त्रेतायुगमिहोच्यते । तस्य तावच्छ्रुतो सं-
ध्या संध्याशश्च तथाविधः ॥ MBh. 3, 12827. HARIV. 312. 11309. fgg. R. 6,
11, 17. VP. 23. BHĀG. P. 3, 11, 18. fgg. दाउनीत्यां यदा राजा त्रीनंशान-
नुवर्तते । चतुर्थमंशमुत्सृज्य तदा त्रेता प्रवर्तते ॥ MBh. 12, 2632. त्रेतामुले
— प्रथमे युगे BHĀG. P. 6, 10, 16. — Vgl. कृत 3, f. g.

त्रैतिनी (von त्रेता) f. die dreifache Flamme der drei Feuer des Altars:
ऊर्धी पते त्रेतिनी भूयज्ञस्य धूर्षु सन्नन् RV. 10, 105, 9.

त्रैथो (von त्रय) adv. = त्रिधा dreifach, in drei Theilen, — Theile, an
drei Orten, zu drei Malen, trifariam P. 5, 3, 46. VOP. 7, 45. RV. 1, 34, 4.
8. 154, 1. 187, 7. त्रेधा सन्नुरापः 7, 101, 4. 10, 45, 2. 75, 1. अग्निमकृत्वा त्रेधा
भुवे कम् 88, 10. VS. 20, 63. AV. 1, 12, 1. 4, 16, 6. त्रेधा ज्ञातं जन्मन्दिं हिरे-
ण्यम् 5, 28, 6. 11, 1, 5. एकस्त्रिधा विहितो ज्ञातवेदः 18, 4, 11. TBR. 1, 1, 5, 8.
त्रेधात्मानं व्यकुहत् ÇAT. BR. 10, 6, 5, 3. 3, 8, 3, 18. त्रेधा वर्हिः संनद्धं भव-
ति 2, 5, 1, 18. तदेकं सत्त्रेधाव्यायते 10, 4, 1, 4. त्रेधा विभज्य देवतां बुधैति
13, 1, 2, 2. 14, 1, 1, 15. KHĀND. UP. 6, 5, 1. °विहितं dreigetheilt ÇAT. BR. 3,
1, 2, 20. 6, 5, 3, 4. 10, 5, 1, 2. fg. 12, 9, 1, 8. °स्थित dass. RAGH. 10, 16.

त्रैशो (von त्रिंशत्) n. (sc. ब्राह्मणा) das aus dreissig Adhājā beste-